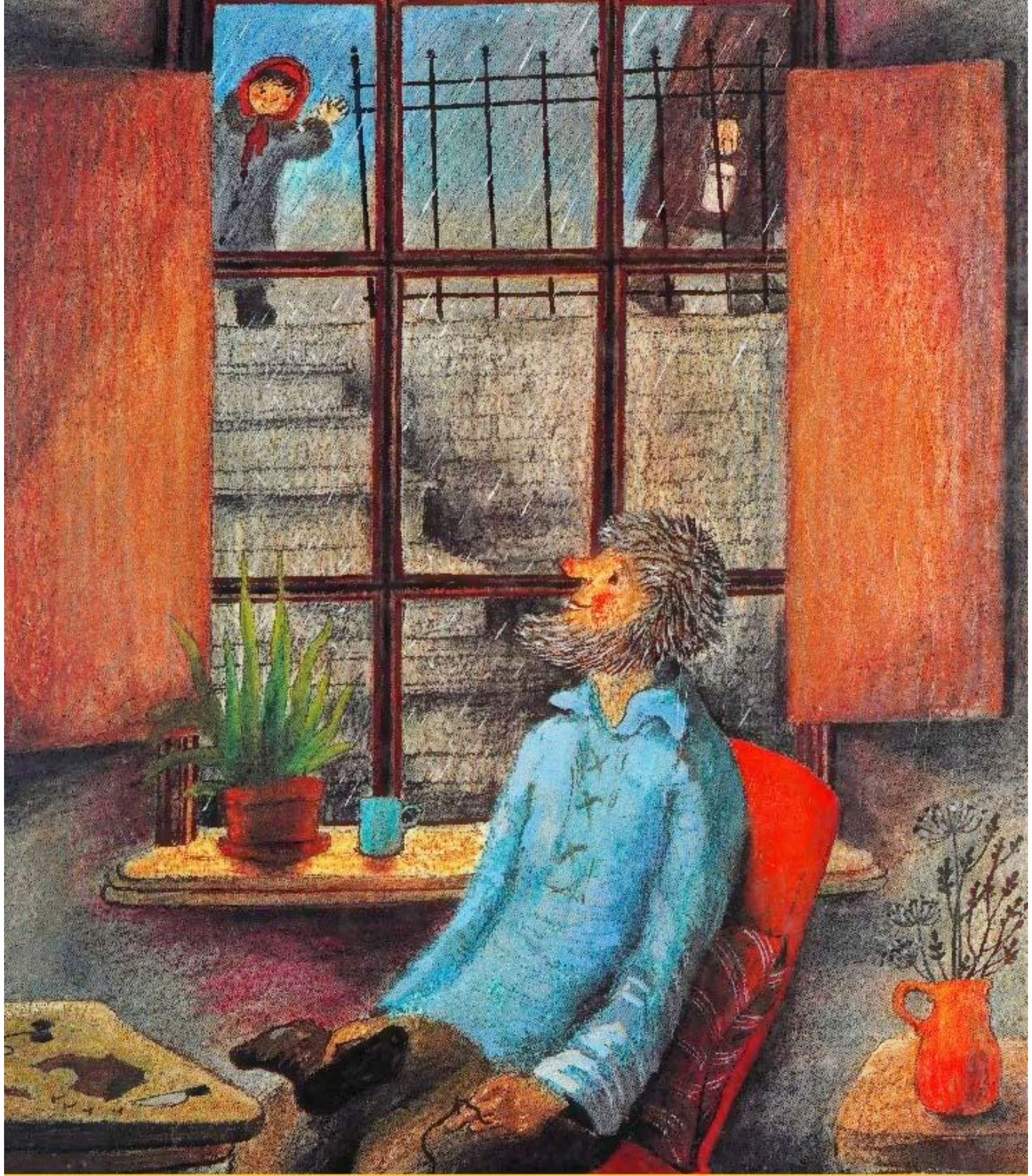

मोची मार्टिन

लीओ तोल्सतोय की कथा पर आधारित

रूपान्तरः ब्रिजिट हैनहार्ट, चित्रः बर्नेडेट वॉटस्, भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मोची मार्टिन

लीओ तोल्सतोय की कथा पर आधारित

रूपान्तरः ब्रिजिट हैनहार्ट

चित्रः बर्नेडेट वॉटस्

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

रूस के एक छोटे से कस्बे में, एक समय मार्टिन नाम का एक आदमी रहता था। वह अपना गुज़ारा जूतों की मरम्मत कर चलाता था। वह तहखाने के एक छोटे से कमरे में रहता और काम करता था। अपनी खिड़की से उसे आते-जोते लोगों के सिर्फ जूते ही दिखाई देते थे। पर वह फिर भी अधिकतर लोगों को पहचान लेता था, क्योंकि उसने कस्बे के जूतों की हरेक जोड़ी की कभी न कभी मरम्मत की थी।

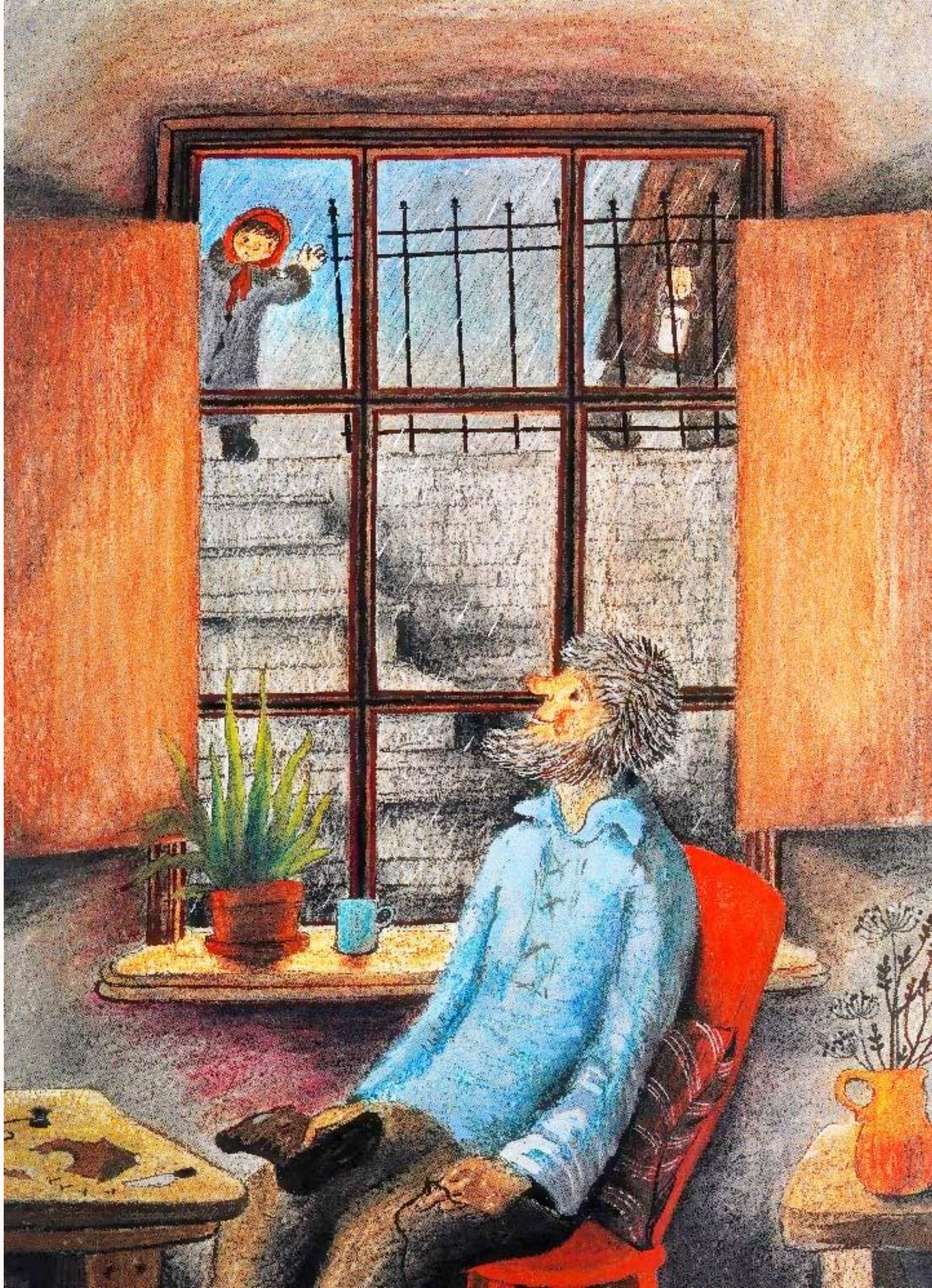

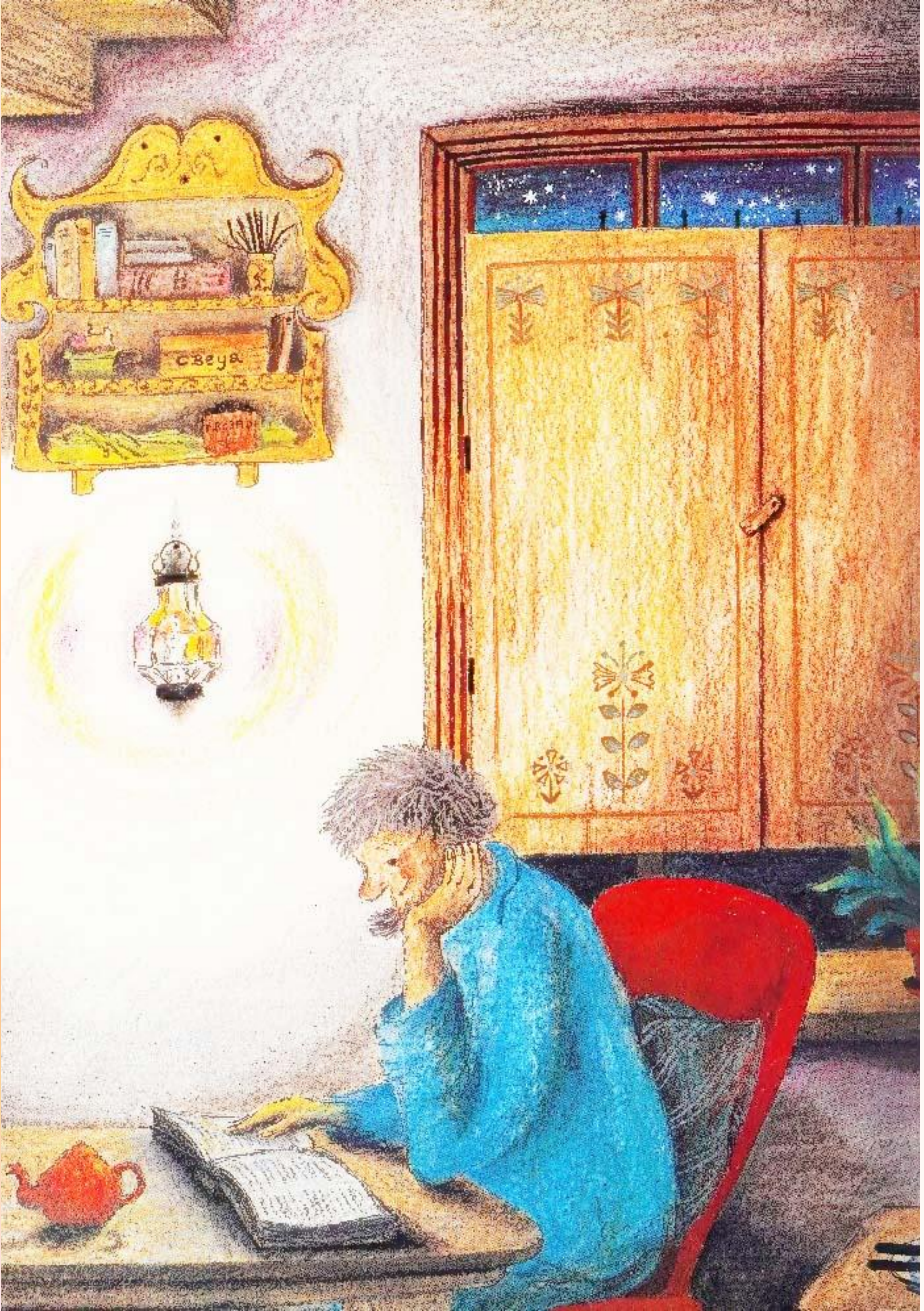

मार्टिन हर दिन तब तक काम करता, जब तक अंधेरा न हो जाता। तब वह एक केतली चाय बनाता, अपनी लालटेन की बाती जलाता और आले पर धरी बाइबल उतार उसके कई पन्ने पढ़ता। वह जितना पढ़ता, खुद को उतना ही खुश महसूस करता।

सर्दियों की एक शाम वह बहुत देर तक पढ़ता रहा। तब वह उस कहानी तक पहुँचा जिसमें एक अमीर आदमी यीशु को अपने घर आमंत्रित करता है। मार्टिन ने उस कहानी पर बहुत सोचा।

"अगर यीशु मेरे घर आए तो मैं क्या कहूँगा? मैं क्या करूंगा? मैं उनका स्वागत कैसे करूंगा?"

यह सब सोचते-सोचते मार्टिन की आँख लग गई।

"मार्टिन!" अचानक एक आवाज़ ने पुकारा। मार्टिन जाग गया। पर वहाँ कोई न था। तब उसे फिर से वही आवाज़ सुनाई दी। आवाज़ ने कहा, "कल सड़क को ध्यान से देखना, क्योंकि कल मैं तुम्हारे घर आऊँगा!"

मार्टिन उठ बैठा और उसने अपनी आँखें मलीं। क्या उसने सचमें ये शब्द सुने थे, या यह सब एक सपना था? उसने कमरे के चारों तरफ सावधानी से नज़र दौड़ाई, पर कोई नज़र न आया। उसने बाती बुझाई और जल्द ही वापस सो गया।

अगली सुबह मार्टिन जल्दी उठा, भोर होने से भी पहले। उसने स्टोव जलाया और उस पर पानी की केतली रखी। वह अपना नाश्ता करते-करते खिड़की के बाहर देखने लगा। वह सोच रहा था कि रात उसने सपना देखा था, या आज उसे एक खास अजनबी जूतों की जोड़ी दिखेगी।

यही सब सोचते हुए वह अपना काम करने बैठा। जब वह चमड़े का एक टुकड़ा काट रहा था, उसे बाहर पदचाप सुनाई दी। उसने देखा तो पाया कि यह तो सड़क का सफ़ाईकर्मी स्टेफान था। वह ठण्ड के मारे अपने पैर पटक रहा था और अपने हाथों पर फूंक मार रहा था, ताकि खुद को कुछ गरमा सके।

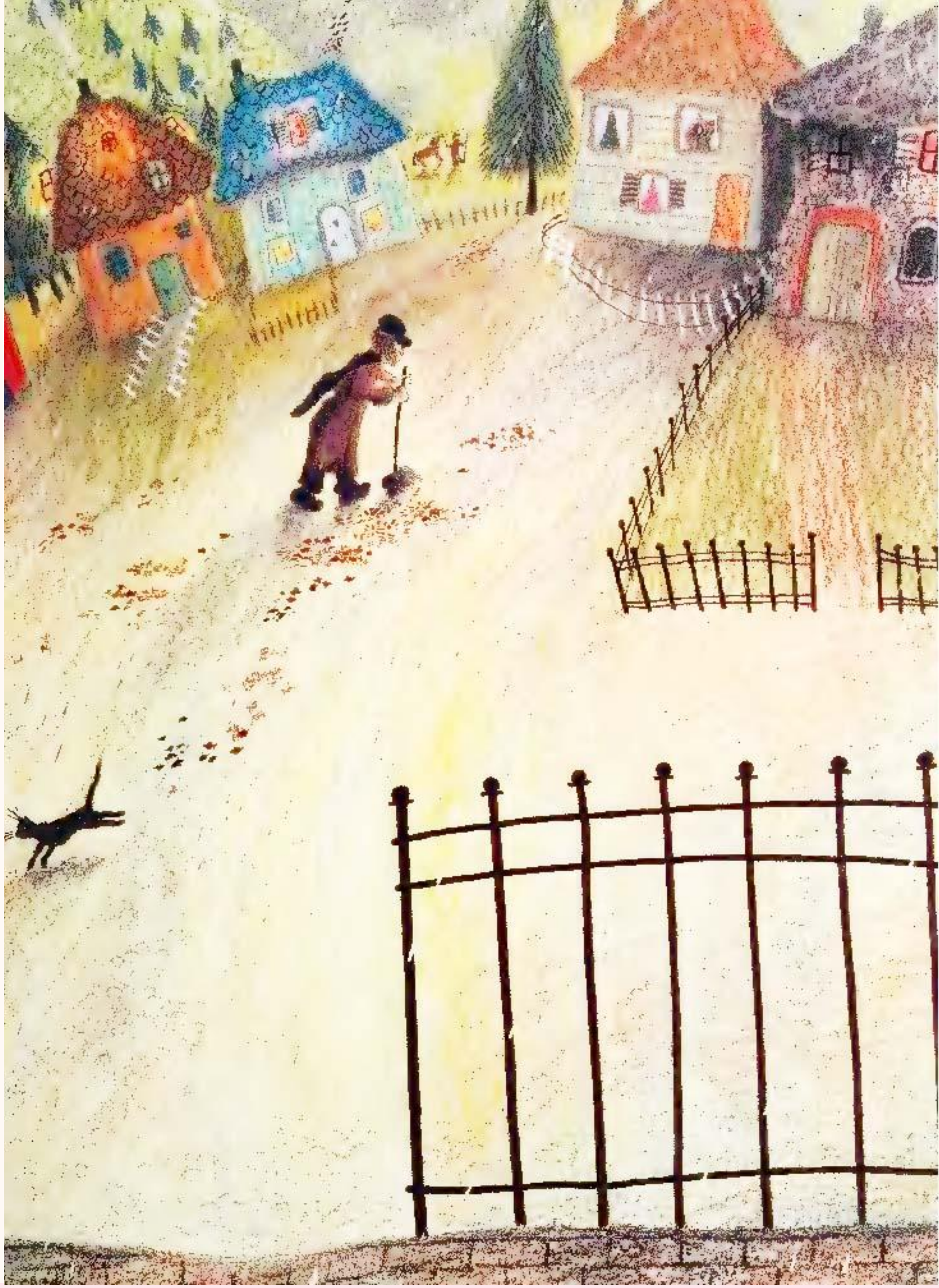

मार्टिन ने फौरन अपनी खिड़की खोली और बोला, ''अन्दर आ जाओ स्टेफान, कुछ देर गरमा लो। केतली खौलने ही वाली है!''

स्टेफान लड़खड़ाता हुआ अन्दर आया।

''पाँव पोंछने की ज़रूरत नहीं। अलाव के पास बैठ जाओ।''

स्टेफान ने मर्टिन की दी गरमा-गरम चाय की चुस्कियाँ लीं। जब वह खुद को गरम महसूस करने लगा, उसने जाने के पहले मार्टिन को शुक्रिया कहा।

''कुछ कहने की दरकार नहीं मेरे भाई! तुम जब चाहो आ सकते हो,'' मार्टिन ने जवाब में कहा।

मार्टिन ने खुद भी चाय का एक प्याला पिया, तब बाद में खाने के लिए पत्तागोभी का शोरबा भी बना लिया। जब अगली बार उसने नज़र उठा कर देखा, उसे एक युवती दिखी, जो खराब मौसम के मारे अपनी बाँहो में अपने शिशु को लिए खड़ी थी। वह अपने बच्चे को ठंडी हवा से बचाने के लिए शिशु को ढाँपने की कोशिश कर रही थी। पर उसे ढ़कने के लिए उसके पास अपनी पुरानी पोशाक के अलावा कुछ भी न था।

मार्टिन दरवाज़े तक गया और उसने युवती को अन्दर आने को कहा।

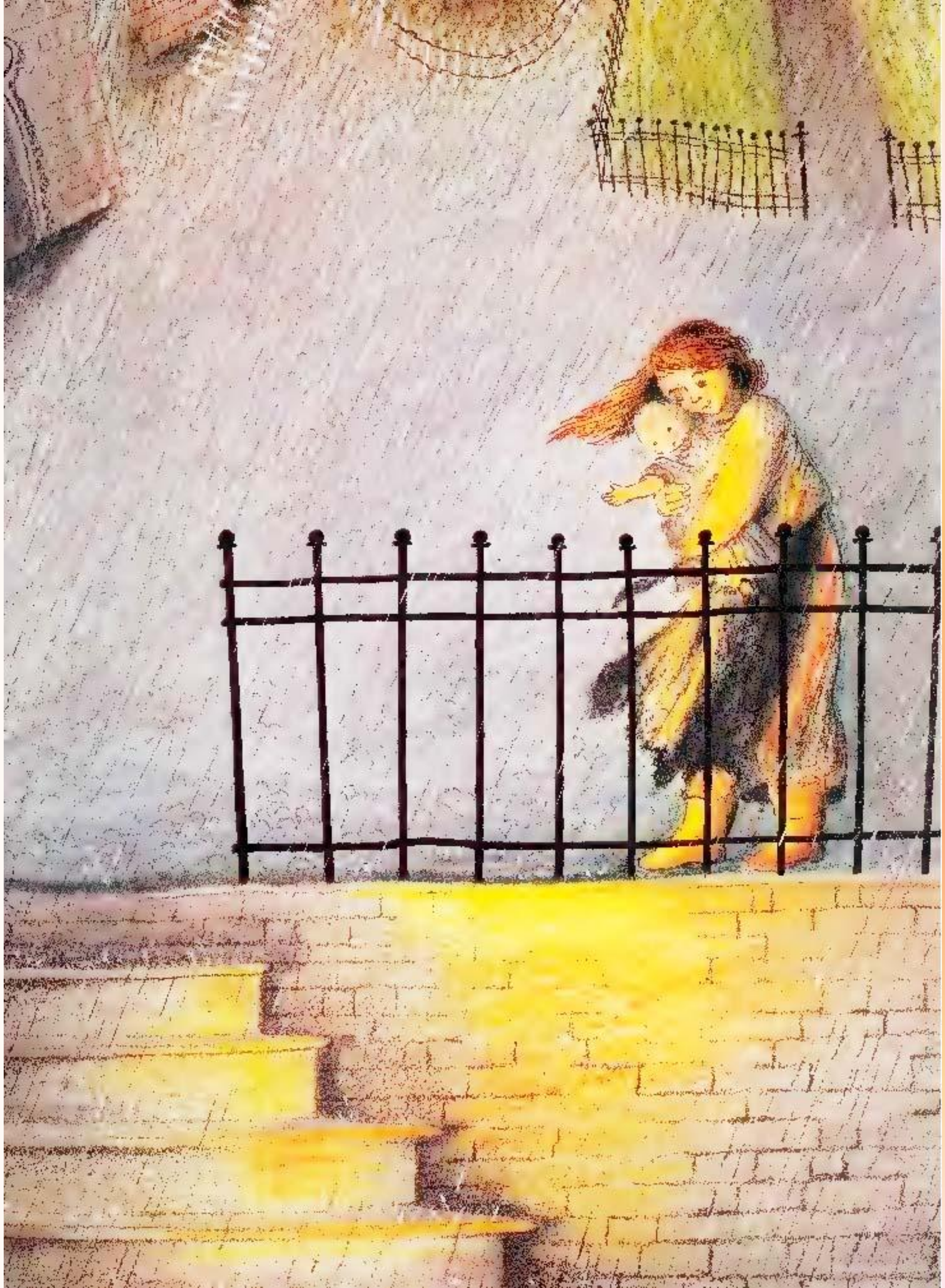

मार्टिन ने उसे थोड़ा शोरबा दिया और उसके शिशु को ढ़कने के लिए अपना पुराना कोट। वह इतना बड़ा था कि वह युवती और उसके शिशु को अच्छे से ढक सके। बाद में वह उसके शिशु से खेला, उसे हंसाया। अन्त में मार्टिन ने अपनी पुरानी सन्दूक से कुछ पैसे निकाले और बच्चे के दूध के लिए उसकी माँ को पकड़ा दिए।

बेचारी स्त्री ने झुक कर मार्टिन का शुक्रिया अदा किया। जब वह गई, तब वह बेहतर महसूस करने लगी थी।

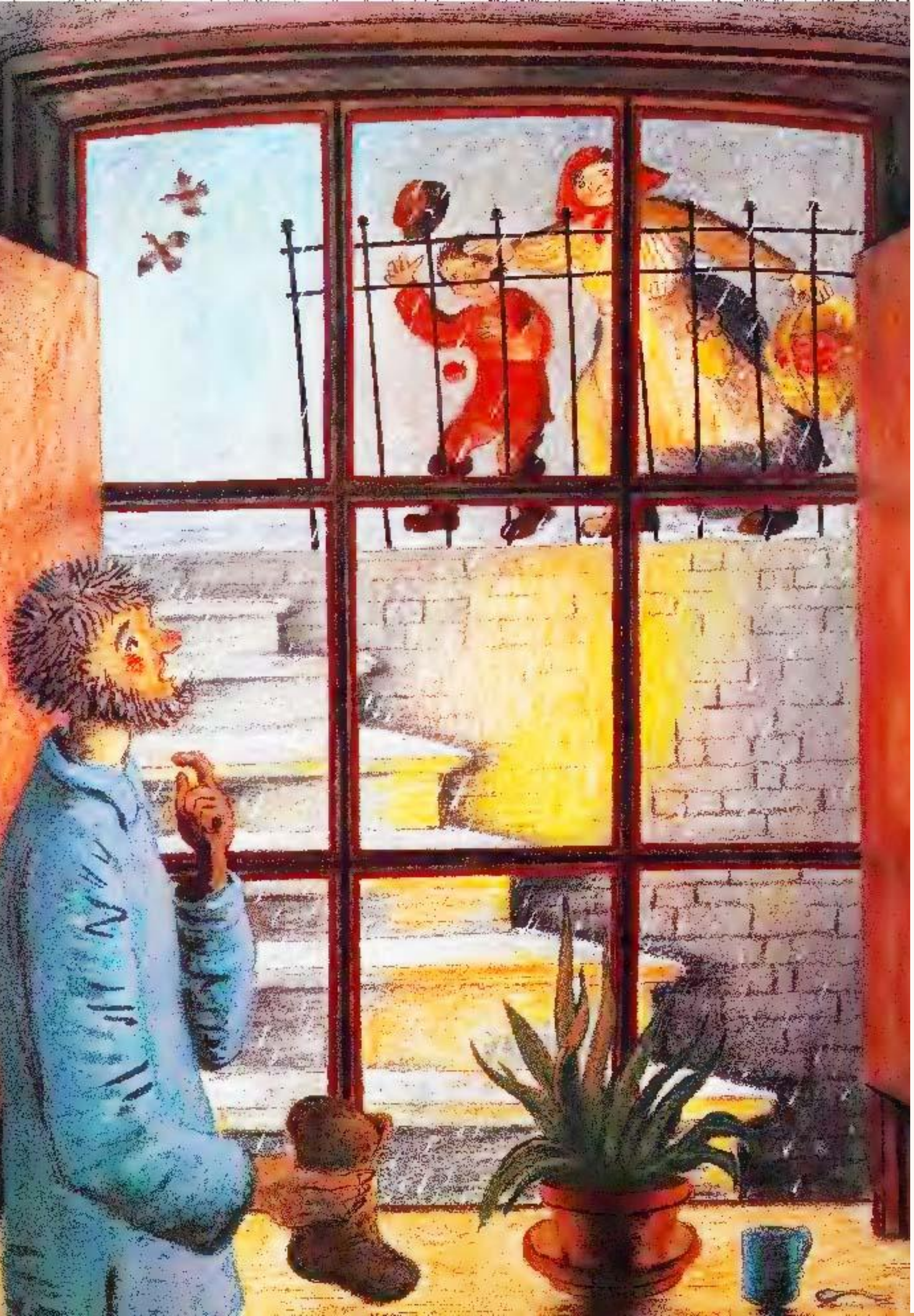

मार्टिन ने बचा हुआ शोरबा खत्म किया, प्याले धो कर रखे, और फिर से काम करने बैठा ही था कि उसकी खिड़की पर किसीका साया पड़ा। मार्टिन ने नज़र दौड़ाई तो देखा कि कस्बे के लोग ही आ-जा रहे थे। ऐसा कोई न था जो खास मेहमान सा दिखता।

अचानक उसने सड़क पर चिल्ल-पौं सुनी। बाज़ार की एक वृद्धा एक फटेहाल लड़के के बाल खींचते ले जा रही थी, जिसने उसका एक सेब चुरा लिया था। लड़का छटपटाते हुए खुद को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था।

मार्टिन जल्दी से बाहर गया और दोनों को अलग किया। ''उसे जाने दो दादी,'' उसने चिरौरी की। ''वह फिर कभी ऐसा नहीं करेगा। अगर हम उसे एक सेब के लिए इतनी सख्त सज़ा देंगे, तो हम अपने पापों के लिए कैसी सज़ा की उम्मीद करेंगे?''

लड़के और महिला ने मार्टिन को देखा, तब एक-दूसरे को। लड़के ने धीमे से वृद्‌धा से माफ मांगी। स्त्री ने उसे मुआफ़ किया। लड़के ने तब वृद्‌धा की टोकरी उठाई, और दोनों सड़क पर आगे बढ़ गए।

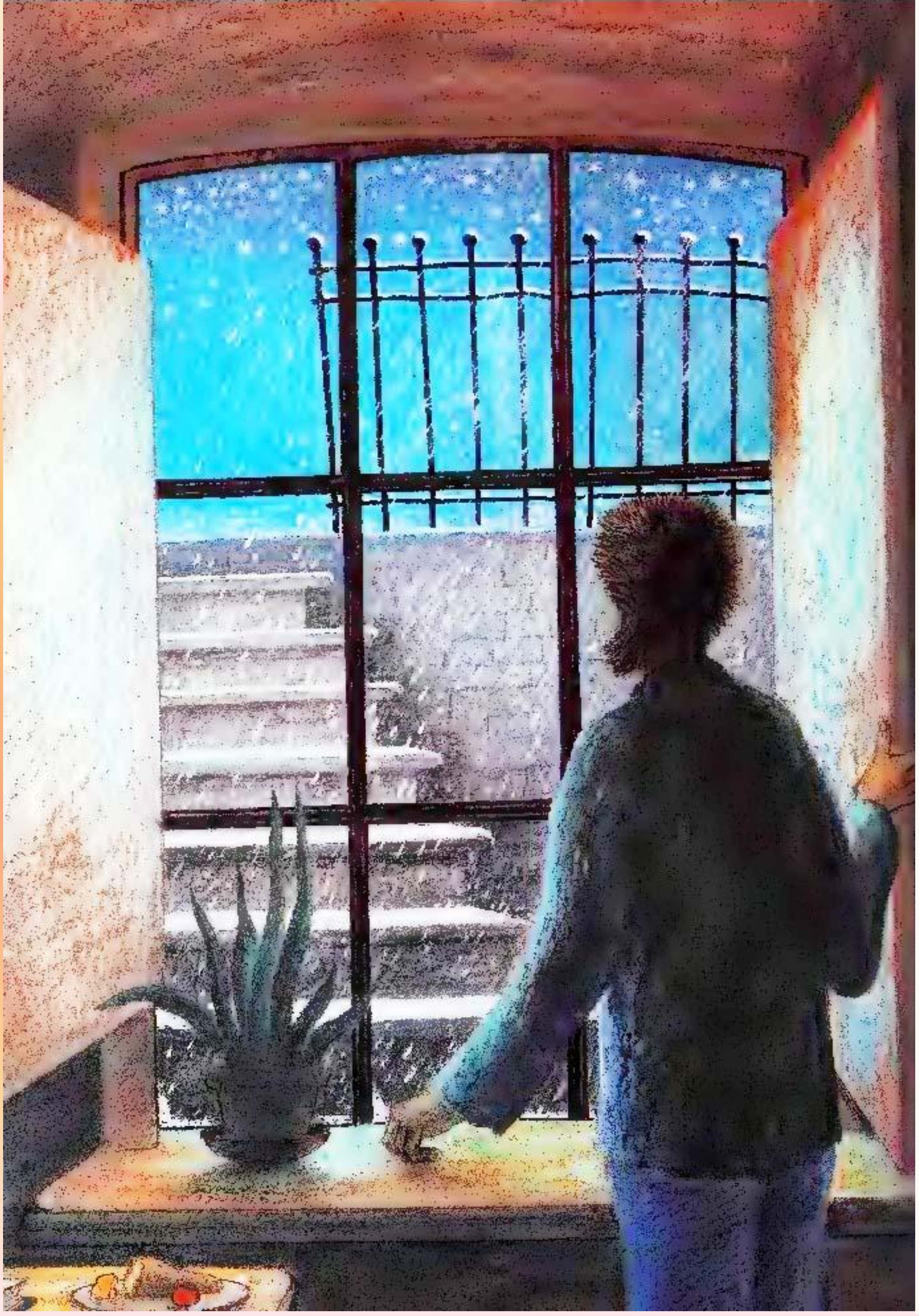

मार्टिन उस जूते की मरम्मत पूरी कर देना चाहता था, जिसे उसे अगले दिन देना था। जल्द ही अंधेरा हो गया। सड़क की बत्तियाँ जलाने वाला उसके कमरे के सामने से गुज़रा। मार्टिन ने अपना काम खत्म किया, अपने औज़ार ठिकाने रखे, और फर्श पर से चमड़े की कतरनें बुहारीं। उसने अपनी लालटेन टांगने वाली कील से उतारी और मेज़ पर धर दी, ताकि फिर से बाइबल का वह हिस्सा पढ़ सके, जो उसके दिमाग में रात से घूम रहा था।

अचानक उसे लगा कि उसके पीछे कोई है। उसने पलट कर देखा, इस बार सचमें कमरे में कुछ लोग थे। पर वह समझ न पाया कि वे कौन थे।

तब एक आवाज़ ने कान में फुसफुसा कर कहा, ''मार्टिन! क्या तुमने मुझे पहचाने नहीं?''

''किसे?''

''मुझे!'' और छायाओं के बीच से स्टेफान मुस्कुराता बढ़ा। ''यह मैं था,'' आवाज़ ने फिर से कहा। तब अपने शिशु के साथ वह युवती आई! वह मुस्कुराई और उसका शिशु हंसा।

''और यह भी मैं ही था,'' आवाज़ ने कहा। इसके बाद वह वृद्धा उस लड़के के साथ आई जिसने सेब चुराया था। दानों मुस्कुरा रहे थे। मार्टिन ने अचरज से भर सबको देखा। तब सब गायब हो गए।

तब जाकर मार्टिन को समझ आया कि उसका सपना पूरा हो चुका था। प्रभु यीशु उसके घर पधारे थे और मार्टिन ने उनका स्वागत कर उन्हें घर में बुलाया था। मार्टिन की खुशी का परावार न रहा।

उस रात वह बाइबल को उसी जगह से पढ़ने लगा, जहाँ रात पढ़ना छोड़ा था। पन्ने के ऊपर लिखा था, ''क्योंकि जो कुछ तुमने इन पीड़ित लोगों के लिए किया, मेरे भाई वह सब, तुमने मेरे ही लिए किया।''

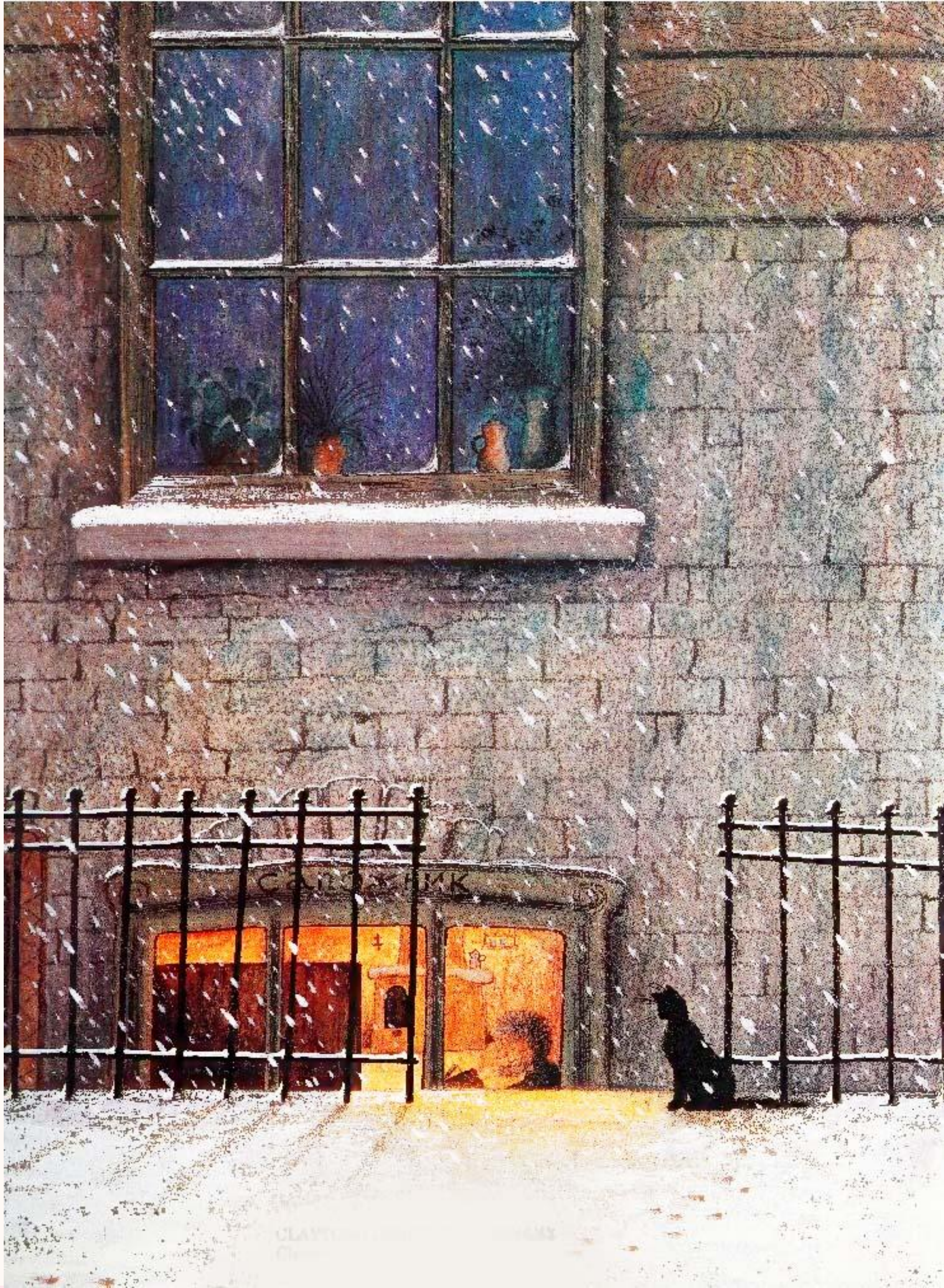

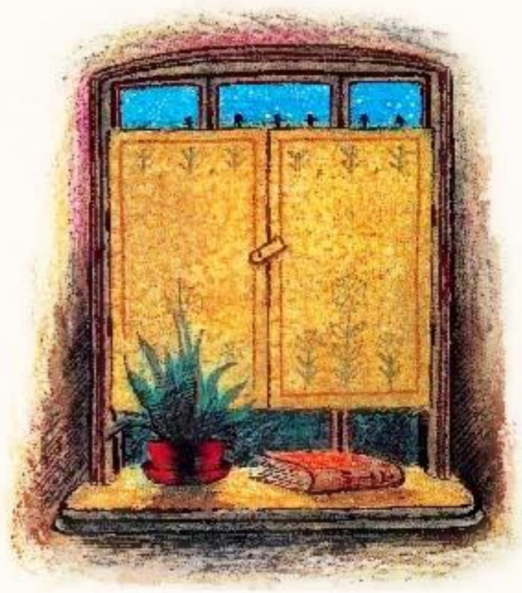

अगर यीशु तुम्हारे घर आते तो तुम क्या करते?

तुम उनका स्वागत कैसे करते?

जब विनम्र मोची मार्टिन अपने घर में सड़क के

ग़रीबों और पीड़ितों का स्वागत करता है,

उसे उनकी असली पहचान का अहसास होता है....